मूरखु विञाए, थो हीरो जनमु हथनि मों,
मिली साध संगति सां, लेखे न लाए,
ड्रांवर जियां पाण खे, थो फंद में फासाए,
मुंहुँ मढ़ीअ पाए, सामी ड्रिसे कीनकी.

महाकवि सामीजी कहते हैं कि मूर्ख (अज्ञानी) मनुष्य अपना हीरे जैसा मूल्यवान जन्म अपने ही हाथों से व्यर्थ गँवाता है। वह साधु-संतों से मिलकर, उनका सानिध्य प्राप्त कर विवेक से विचार कर सकने का प्रयत्न नहीं करता। वह मकड़ी की तरह अपने आप को अपने ही बुने हुए जाल में फँसा कर बैठा है। इतना ही नहीं, वह कभी अपने अंदर झाँक कर देखने का भी प्रयत्न नहीं करता।

मनुष्य को देह रूपी यह वस्त्र, यह चोला, अमूल्य जन्म ईश्वर ने दिया है। मनुष्य के रूप में जन्म लेना बड़े भाग्य का लक्षण माना गया है। पिछले जन्म में किये गये पुण्यों का फलस्वरूप यह नरदेह प्राप्त होती है। यह जन्म बार-बार नहीं मिलता यह जन्म मानो एक सुअवसर है। इस जन्म में भक्ति करके, हरि का स्मरण करके अपना जीवन सार्थक किया जा सकता है। जन्म-मरण के दु:ख से मुक्ति पायी जा सकती है। अपने जन्म को सफल करने में ही मनुष्य का कल्याण है। सामी साहब भी यही बात कहते हैं कि अज्ञानी/मूर्ख मनुष्यों को साधु-संतों से मिलकर उनसे आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए। विवेक बुद्धि द्वारा आत्म स्वरूप को पहचानने का प्रयत्न करना चाहिए। भक्ति या हरि के नामस्मरण द्वारा ही वह मुक्ति का द्वार खोल सकता है।

संसार में तो ज्ञानी और अज्ञानी, दोनों प्रकार के मनुष्य दिखाई देते हैं। इनमें अज्ञानी जीवों की संख्या अधिक होती है। माया के प्रभाव के कारण ऐसे नासमझ इन्सान प्रभु को पहचान नहीं पाते। अहंकार, मोह आदि विकारों के कारण ये जीवन मकड़ी के जाल समान स्वयं ही अपना जाल बुनकर उस में फँसे रहते हैं। विवेक के अभाव में ये लोग अपने मन को शुद्ध एकाग्र नहीं कर सकते। सतगुरु, साधु-संत से मिलकर अपने मन को संशय रहित बनाने की चाह भी उन में नहीं होती। इंद्रियों के वश में रहने वाले ऐसे जन अपनी जीवन ही बर्बाद कर डालते हैं।

कंचन केवल हरि भजन, दूजा काँच कथीर।
झूठा आल जंजाल तजि, पकड़ा साँच कबीर॥

■